UNIVERSAL LIBRARY
OU_182105
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.6|V99K Accession No. G.H.1858

Author व्यास, गोपालप्रसाद|

Title कदम कदम बढ़ाए जा|1955

This book should be returned on or before the date last marked below.

कदम कदम बढ़ाए जा

लेखक की अन्यर चनाएँ

अजी सुनो—हिन्दी-साहित्य में व्यास जी को 'हास्य रसावतार' कहा जाता है। हिन्दी कविता में शिष्ट हास्य की परम्परा के जन्मदाता व्यास जी ही हैं। उनका हास्य पारिवारिक होता है। कवि की पत्नी आज 'जग्गो की जीजी' के रूप में भारत के घर-घर में प्रसिद्ध है। 'अजी सुनो' में व्यास जी की पुरानी सभी प्रसिद्ध कविताओं का संग्रह है। ये रचनाएँ कराची से कलकत्ते और काश्मीर से कन्या-कुमारी तक सहृदयजनों का कंठाहार बनी हुई हैं। मूल्य ४)

मैंने कहा—इस पुस्तक में व्यास जी के व्यंग-विनोदपूर्ण लेखों का संकलन है। हिन्दुस्तान के मशहूर कार्टूनिस्ट श्री अहमद ने इन लेखों पर कई आकर्षक कार्टून बनाए हैं, जो पुस्तक में दिये गये हैं। इस पुस्तक की रचनाओं का अनुवाद गुजराती, मराठी, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी हुआ है। इस पुस्तक पर लेखक को कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। व्यास जी का हास्य गद्य में और भी निखरा है। उनके गद्य की यह विशेषता है कि उसमें उर्दू की सी रवानगी, बंगला की सी मिठास और मराठी जैसा उक्ति-वैचित्र्य पद-पद पर समाया रहता है। व्यास जी का विनोद फूलों जैसा हलका और उनका व्यंग्य अपनी भाव-भूमि पर बारीक-से-बारीक है। मूल्य ३)

हमारे राष्ट्रपिता—गांधी जी पर अनेक पुस्तकें अब तक लिखी गई हैं, लेकिन उनके जीवन और दर्शन को एक ही जगह संक्षेप में आकर्षक कवि-वाणी से व्यक्त करने वाली यह प्रथम पुस्तक है। इस पुस्तक की सराहना सब ने मुक्त कंठ से की है। आचार्य विनोबा भावे ने स्वयं इसकी भूमिका लिखी है और राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टंडन ने इसके दो शब्द। मूल्य २)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

कदम कदम बढ़ाए जा

[वीर रस पूर्ण खंडकाव्य]

लेखक
श्री गोपालप्रसाद व्यास

१९५५
आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

तृतीय संस्करण
मूल्य एक रुपया चार आना

मुद्रक
अमरजीतसिंह नलवा
सागर प्रेस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

स्वर्गवासिनी
जीजी की
ओजस्विनी
स्मृति को

भूमिका

नेताजी के परम पराक्रम का वर्णन मैंने सन् १९४५ में किया था। उन दिनों एक ओर दिल्ली में आजाद हिन्द फौज का मुकदमा चल रहा था और दूसरी ओर दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रतिदिन मेरी ये रचनाएँ धारावाहिक रूप में छप रही थीं। वातावरण तो उद्दीप्त था ही, इन रचनाओं ने उसमें घी का काम किया। दिल्ली के तत्कालीन अंग्रेज कमिश्नर ने पत्र के मालिकों से कहा कि ये रचनाएँ छापनी बन्द कर दी जायँ। दूसरा कोई होता तो डर जाता, पर श्री देवदास गांधी धमकी में कब आने वाले थे? पुस्तक छापने में भी परेशानी उपस्थित हुई। दिल्ली, पंजाब में इसे छापने का साहस उस समय लोगों में नहीं था। तब हिन्दी भवन, लाहौर के स्वर्गवासी श्री देवचन्द्र नारंग ने इसे अपनी ओर से देहरादून के भास्कर प्रेस में छपाया और इसके दो संस्करण हुए।

एक समय था जब ये रचनाएँ उत्तरी-पश्चिमी भारत का कंठहार थीं। प्रभातफेरियों में इसके ओजस्वी तराने जागरण का सन्देश देते थे, सभाओं में शान्ति स्थापित करने के लिए ये रचनाएं गाई-गवाई जाती थीं, यही नहीं, विवाह-शादियों तक में इसके कुछ गीत लोकप्रिय होगए थे। कलकत्ते के एक विख्यात कवि ने तो जगह-जगह इस पुस्तक के कुछ अंशों को अपना बताकर सैकड़ों रुपये भी वसूल कर लिये थे। स्वयं मैंने इन रचनाओं के द्वारा लाखों लोगों को उत्साह से प्रेरित किया है और 'नेताजी के तुलादान' आदि प्रसंगों से सहृदय जनों को हिलकियों से रुलवाया है।

आज इन रचनाओं की सामयिकता नष्ट होगई है। पिछले ८ वर्षों में जमाने की रफ्तार कहीं-से-कहीं बह गई है। एक ओर लोगों को अपने ही रोने से फुर्सत नहीं मिलती तो दूसरी ओर समाज और साहित्य में से धीरे-धीरे व्यक्तिवाद और वीरपूजा समाप्त होती जारही है।

लेकिन कुछ भी हो, नेताजी का पराक्रम साधारण नहीं था। हमारे युग में यह राणा प्रताप, शिवाजी और लक्ष्मीबाई की महान परम्परा का एक जीता-जागता उदाहरण था। सुभाष बाबू अपनी या अपनों की जागीर के लिए नहीं लड़े। वह कोटि-कोटि भारतीयों की आजादी के लिए जूझे थे। इसलिए मेरा विश्वास है कि लाख समय बदले, मगर समय को बदलने वाले वीरों की तप और त्याग से भरी हुई बलिदान-गाथा कभी भी पुरानी नहीं पड़ेगी। कविजन उनके पुण्य चरित्र को और भी उदात्त स्वरों में गाते रहेंगे और भारत की जनता अपने इस आजादी के साके को एक नहीं, दो नहीं, सहस्रों कर्णों से सुनती रहेगी, लाखों नेत्रों से पढ़ती रहेगी।

विजयादशमी
७. १०. ५४

गोपालप्रसाद व्यास

सूचिका

विषय			पृष्ठ
१. पृष्ठभूमि	..	.	११
२. जय !	..	..	२१
३. कथा-प्रवेश	..	..	२२
४. नेताजी का भारत से प्रस्थान	..	..	२६
५. सेनानी का संदेश	..	..	२९
६. खूनी हस्ताक्षर	..	..	३३
७. धन और जन	..	..	३९
८. नेताजी का तुलादान	..	..	४५
९. गांधी-जयन्ती	..	..	५४
१०. दिल्ली की ओर कूच	..	..	६१
११. मुकदमा और मुक्ति	..	..	६५

१
पृष्ठभूमि

दिसम्बर, १९४१ में जापान ने अमरीका और ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध घोषित किया। बहुत थोड़े ही अर्से में बिजली के वेग से देश के बाद देश, द्वीप के बाद द्वीप, जापान के हाथ जाने लगे। सुदूर प्रशान्त-सागर के गुवाम, मनीला से लेकर हांगकांग, थाईलैंड और बर्मा तक के प्रदेशों में जापानी सेनाएँ टिड्डियों की तरह चारों ओर फैल गईं। १५ फरवरी, १९४२ को सिंगापुर का अभेद्य और अजेय किला भी बच्चों के खिलौने की तरह तीन-चार दिन में ही जापान ने हथिया लिया। सिंगापुर के पतन के साथ-साथ बड़ी भारी भारतीय सेना जनरल हंट ने भेड़-बकरी की तरह जापानी जनरल मेजर फुजीवारा के हाथ सौंप दी और हंट ने स्पष्ट तौर से उनसे कहा कि आज से उन्हें जापानियों की आज्ञा का वैसा ही पालन करना चाहिए जैसे अब तक वे अंग्रेजों का करते आये थे।

उन वीर सिपाहियों के सामने, जो एक हाथ से दूसरे हाथ में इस प्रकार समर्पित कर दिये गये थे तथा पूर्वीय एशिया के मलाया आदि प्रदेशों में बसे हुए भारतीयों के सामने, जो पहले अंग्रेजों के शासन में थे, अब जापान के अधिकार में चले गये—एक नया प्रश्न उठा कि अपनी इज्जत और जिन्दगी को बचाने के लिए अब क्या किया जाय? मेजर फुजीवारा ने जापान के सदर फौजी मुकाम पर सुप्रतिष्ठित हिन्दुस्तानियों को बुलाया और उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित होकर सहयोग देने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों की ताकत के इस खात्मे के समय संगठित होकर देश की आजादी का प्रयत्न करना चाहिए। जापान सरकार सब प्रकार से उनकी सहायता करेगी।

पूर्वी एशिया के समस्त प्रदेशों में रहने वाले प्रमुख भारतीयों का एक सम्मेलन जून, १९४२ में बंगकोक में हुआ, जिसमें युद्धबंदी सैनिकों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इसमें आजाद हिन्द संघ का व्यापक रूप से संगठन किया गया और उसके विधान और नियम बनाये गये। इससे हिन्दुस्तान की आजादी में दृढ़ विश्वास की और उसके लिए सब कुछ बलिदान करने की भावना जागृत हुई। संघ के अन्तर्गत आजाद हिन्द फौज के निर्माण का भी निश्चय हुआ।

श्री रासबिहारी बोस का प्रयत्न

प्रथम आजाद हिन्द फौज का निर्माण सितम्बर, १९४२ में हुआ। पिछले महायुद्ध से जापान में गये हुए प्रवासी देशभक्त श्री रासबिहारी बोस ने इस दिशा में पहला प्रयत्न किया। उनकी संरक्षता में पाँच सदस्यों की एक युद्ध-समिति बनी। प्रधान रासबिहारी बोस, दो आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि, कप्तान मोहनसिंह तथा कर्नल गिल और दो नागरिक जनता के प्रतिनिधि श्री एन. राघवन तथा श्री पी. के. मैनन। यह निश्चय हुआ कि आजाद हिन्द फौज की स्थिति जापानी फौज के समान स्वतंत्र भारत की राष्ट्रीय सेना की-सी होगी। इसका उपयोग केवल भारत में विदेशियों के विरुद्ध स्वदेश की आजादी की प्राप्ति के लिए ही होगा। पर जापानी लोग आजाद हिन्द फौज को कठपुतली सेना बनाना चाहते थे, यह स्वाभिमानी भारतीयों को स्वीकार नहीं हुआ। जापानियों ने पहले कर्नल गिल और फिर कप्तान मोहनसिंह को गिरफ्तार कर लिया। कप्तान मोहनसिंह ने अपनी गिरफ्तारी के समय प्रथम आजाद हिन्द फौज भंग कर दी।

पूर्वी एशिया में रहने वाले हिन्दुस्तानियों के नये प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन १९४३ के अप्रैल में सिंगापुर में हुआ। उक्त सम्मेलन में श्री रासबिहारी बोस ने बतलाया कि अब संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्र बोस होंगे और उन्हीं के नेतृत्व में आजाद हिन्द संघ का काम

चलेगा। २० जून, १९४३ को मुस्लिम युवक हसन के साथ सुभाष बाबू एक पनडुब्बी द्वारा टोकियो पहुँच गये। वहाँ से २ जुलाई, १९४३ को सिंगापुर। इस अवसर पर एक वृहत्तर पूर्वी एशिया सम्मेलन किया गया था जिसमें विभिन्न सुदूर पूर्व देशों से आजाद हिन्द संघ के प्रतिनिधि आये थे। इस सम्मेलन के एक प्रस्ताव के आधार पर ही आजाद हिन्द की एक अस्थायी सरकार स्थापित की गई। बाबू सुभाषचन्द्र बोस इसके अध्यक्ष चुने गये थे।

नेताजी की प्रतिज्ञा

आजाद हिन्द संघ की ओर से बुलाये गये सम्मेलन में २१ अक्तूबर, १९४३ को १०॥ बजे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सरकार के कायम होने की घोषणा करते हुए हिन्दुस्तान के प्रति वफादार रहने की यह प्रतिज्ञा की थी—"भारत माता और उसकी अड़तीस करोड़ सन्तान को आजाद करने के लिए मैं सुभाषचन्द्र बोस अपने जीवन की अन्तिम साँस तक स्वतन्त्रता के इस पवित्र युद्ध को जारी रखने की प्रतिज्ञा ईश्वर को साक्षी रखकर करता हूँ। मैं यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं सदा ही अपने को हिन्दुस्तान का सेवक मानता रहूँगा। अपने देश के अड़तीस करोड़ भाई-बहनों की भलाई करना मेरे जीवन का व्रत और सबसे बड़ा कर्तव्य होगा। आजादी प्राप्त करने के बाद उसकी रक्षा के लिए अपने जीवन को न्योछावर करने के लिए मैं सदैव तत्पर रहूँगा।"

नेताजी की प्रतिज्ञा के बाद अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के अधिकारियों की ओर से एक घोषणा-पत्र पढ़ा गया जिसके अन्त में कहा गया था—"हम भगवान तथा अपने उन पूर्वजों को साक्षी रखकर, जिन्होंने हमें एक राष्ट्र का रूप दिया है और उन शहीदों के नाम पर, जिन्होंने वीरता और बलिदान की परम्परा को कायम किया है, देशवासियों का आह्वान करते हैं कि वे आज अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध

करने को इस झंडे के नीचे आकर खड़े हों। हम उनको आमन्त्रित करते हैं कि अंग्रेजी सत्ता और उनके साथियों के विरुद्ध इस अन्तिम संग्राम को शुरू करदें, अपनी विजय में विश्वास रखकर जान की बाजी लगा द और तब तक इसको जारी रखें, जब तक हम अपने शत्रु को देश से बाहर न निकालदें और इस तरह भारत को फिर से आजाद न करलें।

आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की ओर से इस पर निम्नलिखित अधिकारियों के हस्ताक्षर थे :

सुभाषचन्द्र बोस, राष्ट्र के प्रधान, युद्ध और परराष्ट्र विभाग के मंत्री; कप्तान कुमारी लक्ष्मी, महिला संगठन विभाग; एस. ए. अय्यर, प्रकाशन और प्रचार विभाग; लेफ्टिनेंट कर्नल ए.सी. चैटर्जी, अर्थ विभाग; लेफ्टिनेंट क. अजीज अहमद; ले. क. एल. एस. भगत; ले. क. जे. के. भोंसले; ले. क. गुलजारासिंह; ले. क. एम. जैड. कियानी, ले. क. ए. डी. लोकनाथन; ले. क. अहसान कादिर; ले. क. शाहनवाज, सेना के प्रतिनिधि; ए. एम. सहाय, सेक्रेटरी मंत्री की हैसियत। रासबिहारी बोस प्रधान सलाहकार; करीम गनी, देवनाथादस, डी. एम. खान, ए. यल्लापा, जे. थीवी, सरदार ईश्वरसिंह सलाहकार; ए. एन. सरकार कानूनी सलाहकार।

स्वतन्त्र संगठन

आजाद हिन्द सरकार का अपना विधान, न्याय, कोष और संगठन था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के भारतीयों की वफादारी उसके साथ थी। स्वतंत्र ९ राष्ट्रों ने इसे भारत की सरकार मानकर अपने प्रतिनिधि भेजे थे। जून, १९४४ में अकेले मलाया में २,३०,००० लोगों ने लिखित रूप से अपनी वफादारी आजाद हिन्द सरकार के प्रति प्रकट की थी। भारत से बाहर बसे हुए भारतीयों ने अपनी इस सरकार के लिए स्वेच्छा से २० करोड़ का दान दिया था। सरकार व सेना का खर्च उसीसे चलता था। अंग्रेजों ने जब बर्मा पर कब्जा किया तो आजाद बैंक में

३५ लाख रुपए जमा पाये गये। आजाद हिन्द सरकार के संगठन में २० लाख से ऊपर आदमी थे।

आजाद हिन्द फौज के सैनिक न तो उसमें पैसे के लालच से भरती हुए थे, न जबरदस्ती से। वे अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व निछावर करके लड़े थे। कई दिन वे बिना रसद और बिना पानी के लड़ते रहे। उन्होंने गुलामी के घी से आजादी की घास को ज्यादा पसन्द किया। इस सम्बन्ध में फौजी अदालत में कप्तान शाहनवाज़ का वक्तव्य ध्यान देने योग्य है। उन्होंने कहा, "जब मैंने आजाद हिन्द फौज में शामिल होने का निश्चय किया तो अपनी हर एक चीज को त्याग करने का फैसला कर लिया था। मैंने अपनी जिन्दगी, अपना घर, अपना परिवार तथा उसकी परम्परा (समाज के प्रति वफादारी) सब कुछ कुरबान कर देने का फैसला कर लिया था। मैंने यह भी फैसला कर लिया था कि यदि मेरा भाई भी मेरे रास्ते में रुकावट पैदा करेगा तो मैं उससे भी लड़ूंगा। सन १९४४ में हम वास्तव में एक दूसरे के खिलाफ लड़े भी। वह घायल होगया, चीन की पहाड़ियों में करीब दो मास तक मैं और मेरा चचेरा भाई एक दूसरे के विरुद्ध लड़ते रहे। हमारे सामने यह प्रश्न था कि हम देश के प्रति वफादार रहें या सम्राट् के प्रति ? मैंने देश के प्रति वफादार रहना तय किया और अपने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को वचन दिया कि मैं अपना सब कुछ कुरबान कर दूंगा।"

आजाद हिन्द फौज में महिलाएँ भी सम्मिलित थीं। उनके दस्ते का नाम 'रानी झांसी रेजिमेंट' था। उनकी सेनानी डा० लक्ष्मी थी। महिलाएँ जहाँ घायलों की सेवा का काम करती थीं, वहाँ रण में भी जाने को उत्सुक रहती थीं।

इस आजाद हिन्द सरकार ने भारत की स्वतन्त्रता को अपना प्रधान उद्देश्य बनाया और ब्रिटेन एवं अमरीका के विरुद्ध नियमपूर्वक युद्ध-घोषणा कर दी। इस युद्ध-घोषणा के फलस्वरूप ही आजाद हिन्द फौज युद्ध के मैदान में उतरी।

जब आजाद हिन्द फौज भारत की भूमि पर उतरी तो जापान से यह तय करा लिया गया था कि विजित प्रदेशों पर आजाद हिन्द सरकार का कब्जा रहेगा और निश्चय ही आगे चलकर विशनपुर, मणिपुर आदि आजाद फौज के अधीन कर दिये गये।

यही नहीं, अंडमन-नीकोबार (कालेपानी) पर भी, आजाद हिन्द सरकार का कब्जा था। इन द्वीपों के नाम 'शहीद' और 'स्वराज्य' रख दिये गये थे। इसी प्रकार जियावाड़ी नामक स्थान को भी, जिसमें १५,००० भारतीय रहते थे, जापान ने आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिया था।

आजाद हिन्द फौज का लक्ष्य

आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द सरकार का एक ही लक्ष्य था—भारतमाता को विदेशी शासन से मुक्त करना। उनका एक ही ध्येय था—आजादी या मौत। उनका एक ही नेता था—सुभाषचन्द्र बोस। उनका युद्ध-घोष था—'दिल्ली चलो'। उनके नारे थे—'इन्किलाब-जिंदाबाद' और 'आजाद हिन्द जिंदाबाद'। उनका मोटो था—विश्वास, एकता, बलिदान। शेर के साथ टीपू सुल्तान का चित्र उनकी कौमी निशानी थी। तिरंगा ही उनका कौमी झंडा था। 'जयहिन्द' उनकी कौमी सलामी का शब्द था। जब एक हिन्दुस्तानी दूसरे हिन्दुस्तानी से मिलता तब 'जयहिन्द' कहकर ही उसका स्वागत करता और रविबाबू का 'जय हे!' उनका राष्ट्रीय गान था।

आजाद फौज में जाति-भेद नहीं था। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और एंग्लो इण्डियन तक भी साथ खाते, साथ रहते और समान रूप से देश के लिए कुर्बानी देते थे। प्रत्येक आजाद हिन्द सेना के सिपाही को यह शपथ लेनी होती थी, "मैं अपनी इच्छा से और खुशी से आजाद हिन्द फौज का सैनिक बन रहा हूँ। मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ भारत की स्वतन्त्रता के लिए अर्पण करता हूँ। प्राणों की परवाह किये बिना मैं भारत की सेवा तथा भारतीय स्वतन्त्रता के लक्ष्य

की प्राप्ति के लिए कार्य करूँगा। इस सेवा-कार्य में मेरा कोई व्यक्तिगत स्वार्थ न होगा। अपने हृदय में जाति, धर्म या भाषा के भेद की भावना को मैं किसी भी प्रकार का स्थान नहीं दूंगा तथा प्रत्येक भारतीय स्त्री-पुरुष को स्नेह की दृष्टि से देखूंगा तथा उन्हें अपना भाई समझूंगा।"

श्री सुभाषचन्द्र बोस ने बर्मा में कॉंग्रेस, गांधीजी और तिरंगे झंडे के सम्बन्ध में अपना सम्मान प्रकट किया था। आजाद फौज की ब्रिगेडें भारतीय नेताओं के नाम पर बनाई गई थीं। कॉंग्रेस के ध्येय अहिंसा से आजाद सरकार और उसके सैनिक हट गये और उन्होंने हिंसक लोगों को हिंसा से ही सबक देना चाहा! वे भारत के पूर्वी मोर्चों पर जम कर लड़े। रसद चुक जाने पर घास और पत्ते खाकर लड़े। गोलियाँ बीत गईं तो संगीनों से लड़े। उनके साहस और स्वाभिमान के आगे जापानी अँगुली दबाते थे। उनके कौमी गीतों की पुकार पर दल-के-दल विपक्षी सैनिक उनमें आकर मिल जाया करते थे।

आजाद हिन्द सरकार शस्त्रों के अभाव में, रसद के अभाव में, वैज्ञानिक साधनों के अभाव में विफल मनोरथ हुई। उसका प्रयत्न अधूरा रह गया। इंफाल और कोहिमा के जीते हुए मैदानों से पीछे हटते-हटते बर्मा के क्षेत्रों में लड़ते हुए, विवश होकर युद्धबंदी के रूप में उन्हें आत्म-समर्पण करना पड़ा।

महान प्रयत्न की विफलता

इस महान् प्रयत्न के विफल होने के बाद २४ अप्रैल, १९४३ को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और उनके साथी रंगून छोड़कर बैंकोक चले गये। जापानी सेनापति और बर्मा सरकार २३ अप्रैल को ही वहाँ से हट गई थी। मेजर जनरल लोकनाथन् के नेतृत्व में ६,००० आजाद हिन्द सेना के सैनिक रंगून में इसलिए छोड़ दिये गये ताकि वह रंगून-स्थित भारतवासियों की जान-माल की हिफाजत कर सकें। आजाद हिन्द संघ के उपाध्यक्ष जे. एन. भादुरी भी वहीं थे। ५ मई १९४५, को

अंग्रेजी सेना फिर रंगून में घुसी और आजाद हिन्द फौज के सिपाही युद्धबंदी बना लिये गये।

जब जापान ने अगस्त, १९४५ में हथियार डाल दिये, तो कहा जाता है उसी दिन नेताजी हवाई जहाज द्वारा टोकियो के लिए रवाना हुए। रास्ते में वह हवाई-दुर्घटना से घायल हुए और इस संसार से चल बसे। उनके दाहिने हाथ और साथी कर्नल हबीबुर्रहमान इस घटना को सच बताते हैं। आप भी इसी जहाज पर सवार थे। आग लगने से आपके भी हाथ झुलस गये हैं, पर भारतीयों का दिल आज तक इस घटना को सही नहीं मानता।

आजाद हिन्द फौज के अफसर और सैनिक हजारों की तादाद में भारत के भिन्न-भिन्न कैंपों, जेलों और किलों में बंदी की हालत में लाये गये। कुछ को चुपचाप फाँसी भी दे दी गई। देशकेसरी नेहरू ने उनके प्रश्न को लिया। उनकी एक पुकार से सारा देश जागृत हो उठा। सारे देश में एक आन्दोलन की लहर आजाद हिन्द फौज को छुड़ाने के लिए चल पड़ी। सरकार ने मेजर जनरल शाहनवाज, कर्नल प्रेमकुमार सहगल और कर्नल गुरबख्शसिंह ढिल्लों का कोर्ट मार्शल प्रारम्भ किया। काँग्रेस ने रक्षा-समिति बनाई। श्री भूलाभाई देसाई, बख्शी सर टेकचन्द तथा कुँवर सर दिलीपसिंह जैसे उच्चकोटि के वकील उनकी पैरवी को पहुँचे। स्वयं पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी फिर से बैरिस्टरी का चोगा पहना। श्री भूलाभाई देसाई की बहस के बाद सरकारी वकील तक को मानना पड़ा कि यद्यपि उनका अपराध है, पर वे भूले हुए थे। उनका आदर्श ऊँचा था। कोर्ट मार्शल ने सजा की सिफारिश की, पर देश के आन्दोलन ने कमान्डर-इन-चीफ को विवश किया कि वह तीनों को छोड़ दें।

संक्षेप में यह है आजाद हिन्द फौज का बलिदानी इतिहास। यह है युग-युग से सोए हुए भारतीय सिंहों की एक करवट, जिसकी पृष्ठभूमि ने सदा-सदा के लिए, यहाँ से अंग्रेजों को चले जाने के लिए विवश कर दिया और हम आजाद हुए। जयहिन्द!

शहीदों की चिताओं पर
जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का,
यही बाकी निशां होगा।

२

जय !

पावन प्रताप तेरी जय हो,
हे वीर शिवा, लो नमस्कार।
अट्ठारह-सौ सत्तावन के,
वीरों का वन्दन बार-बार।

मैं झाँसीवाली रानी के,
चरणों में शीश झुकाता हूँ।
नेताजी को कर नमस्कार,
मैं अपनी कलम उठाता हूँ।

जय हिन्द! देश भारत की जय!
जय! इस पर मरने वालों की!
आजाद हिन्द सेना की जय!
जय! वीर जवाहरलालों की!

जय! अपने अचल तिरंगे की,
जो बलि का पथ दिखलाता है!
उस राष्ट्र-सिपाही की जय-जय!
जो इस पर जान अड़ाता है!

३
कथा-प्रवेश

अंग्रेजी फौजें बर्मा में,
जब बुरी तरह मिस्मार हुईं।
तो छोड़ हिन्दवी लोगों को,
भग उठने को तैयार हुईं।

गोरे अपने बिस्तर-बोरे,
जब सर पर रखकर भाग गये।
तो हिन्दुस्तानी पलटन के,
दिल में लग गहरे घाव गये।

फिर इधर अगस्त बयालिस में,
भारत में अत्याचार हुए।
गोलियाँ चलीं, दुर्भिक्ष पड़े,
लाखों जन बे-घरबार हुए।

कलकत्ते के फुटपाथों पर,
भूखी गंगा घहराती थी।
बच्ची माता के हाथों से,
टुकड़ों पर बेची जाती थी।

आसाम-सड़क पर खुलेआम,
जब लाज उतारी जाती थी।
भारत की नारी जहाँ सिर्फ़,
पुँश्चली पुकारी जाती थी।

जब अपने देशसेवकों को,
गद्दार पुकारा जाता था।
भारत-रक्षा के नाम जहाँ,
सर्वस्व उतारा जाता था।

तो जैसे जग की पराधीनता,
सोते से हो जाग गई !
थी सौ-सौ वर्षों की कायरता,
पूँछ दबाकर भाग गई !

था '[illegible]' की बोली थी,
गाली सी लग बेदाग गई !
हर भारतीय के प्राणों में,
आजादी की लग आग गई !

उस समय समूचे भारत में,
एक अजब जलजला आया था !
आजादी का दरिया अपने,
पूरे उफान पर आया था !

होगए युवक तैयार,
देश पर अपना फर्ज निभाने को।
माताएँ आगे बढ़ आईं,
बच्चों की भेंट चढ़ाने को !

बहनें भी आगे आई थीं,
अपना कर्तव्य चुकाने को।
बस, इन्कलाब ही कहना होगा,
बदले हुए जमाने को!

उठ पड़ी जवानी बलखाती,
जुल्मों का नाम मिटाने को।
उठ पड़ी दासता शासक की,
सत्ता का सत्व हटाने को।

आगया ज्वार वह जीवन में,
मर मिटने के अरमान उठे।
कुछ करने की लालसा उठी,
सोये आहत अपमान उठे।

तो युग की भीषण झंझा से,
ब्रह्मा का आसन डोला था।
प्रलयंकर शंकर ने क्रोधित हो,
नेत्र तीसरा खोला था।

तो, आदि रुद्र हुँकार उठे,
चैतन्य अनादि भवानी थी।
सारे भारत में एक बार,
फिर जागी नई जवानी थी।

फिर एक बार अंग्रेजों को,
सत्तावन की सुधि आई थी।
फिर एक बार जयहिन्द हिन्द की,
ध्वनि सर्वत्र समाई थी।

फिर एक बार बज उठी,
जगत में भारत की शहनाई थी।
जिसकी ध्वनि भारत से उठकर,
सारे बर्मा में छाई थी।

इस भीषण विषम परिस्थिति में,
आजाद फौज तैयार हुई।
बर्मा से भारत आने को,
वह इसीलिए लाचार हुई।

जब उसने पाया क्रूर-कर्म,
ढीली दिल्ली की किल्ली को।
तो नरवीरों के मुण्ड चले,
वापस लेने फिर दिल्ली को।

लानत है, जो यह कहते हैं—
यह जापानी तैयारी थी।
लानत है, जो यह कहते हैं—
इन लोगों ने गद्दारी की।

ये आजादी के हामी थे,
ये सच्चे देश-सिपाही थे।
जो सड़क गई आजादी को,
ये उसी राह के राही थे।

है यही वही आजाद फौज,
जिसका इतिहास अधूरा है।
जिसको अपने बलिदानों से,
भारत को करना पूरा है।

४

नेताजी का भारत से प्रस्थान

है समय नदी की बाढ़—
कि जिसमें सब बह जाया करते हैं।
है समय बड़ा तूफ़ान—
प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं।

अक्सर दुनिया के लोग,
समय मे चक्कर खाया करते हैं।
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं,
इतिहास बनाया करते हैं।

यह उसी वीर, इतिहास-पुरुष की,
अनुपम अमर कहानी है।
जो रक्त-कणों से लिखी गई,
जिसकी 'जयहिन्द' निशानी है।

प्यारा सुभाष, नेता सुभाष,
भारत-भू का उजयाला था।
पैदा होते ही गणकों ने,
जिसका भविष्य लिख डाला था—

"यह वीर चक्रवर्ती होगा,
या त्यागी होगा संन्यासी।
इसके गौरव को याद रखेंगे,
युग-युग तक भारतवासी।"

सो, वही वीर नौकरशाही ने,
पकड़ ज़ेल में डाला था।
पर क्रुद्ध केशरी कभी नहीं,
फन्दे में फँसने वाला था।

वह मत्त मतंगों के झुण्डों के—
ऊपर होकर चला गया।
वह आँधी था कि बवण्डर था,
दुश्मन के दिल को हिला गया!

बाँधे जाते इन्सान, कभी,
तूफान न बाँधे जाते हैं।
काया जरूर बाँधी जाती,
बाँधे न इरादे जाते हैं!

वह दृढ़-प्रतिज्ञ सेनानी था,
जो मौका पाकर निकल गया।
वह पारा था, अंग्रेजों की—
मुट्ठी में आकर फिसल गया।

जिस तरह धूर्त दुर्योधन से,
बचकर यदुनन्दन आये थे।
जिस तरह शिवाजी ने मुगलों के,
पहरेदार छकाये थे।

वह इसी तरह ही तोड़ पींजरा,
तोते-सा बेदाग गया !
जनवरी माह, सन् इकतालिस,
मच गया शोर वह भाग गया !

वह कहाँ गये, वह कहाँ रहे,
यह धूमिल अभी कहानी है।
हमने तो इसकी शेष कथा,
आजाद फौज से जानी है।

५

सेनानी का संदेश

सोलह फरवरी बयालिस को,
सिंगापुर का गढ़ टूट गया।
दक्षिण-पूरब के देशों से,
भारत का दामन छूट गया।

रह गईं हजारों ही फौजें,
रह गये नागरिक भारत के।
बच्चे छूटे, पत्नी छूटी,
टूटे पहाड़ उन पर दुख के।

भारत जाना होगया स्वप्न,
था राज नया, था साज नया।
छागई निराशा लोगों पर,
दीखा न कोई अन्दाज नया।

पर, सहसा इसी निराशा में,
आशा का स्वर्ग उतर आया।
प्राणों को सजग बनाता-सा,
अनमोल बोल उन पर छाया—

"तुम देखो, दूर क्षितिज के तट,
उस पार हमारी दुनिया है।
उस पार हमारे जंगल हैं,
उस पार हमारी नदियाँ हैं।

इन धूमिल बड़े पहाड़ों के,
उस पार हमारी माता है।
यह वायु हमारे खेतों की,
मिट्टी को छूता आता है।

उस पार हमारी जन्मभूमि,
जो देवों की भी प्यारी है।
जिसके आगे सर्वस्व हमारा,
तन, मन, धन बलिहारी है।

तुम सुनो, हवा की लहरों पर,
आवाज तैरती आती है।
जयहिन्द, उठो, साहस बाँधो,
मा अपने पास बुलाती है।

चालीस कोटि कण्ठों की ध्वनि,
कहती है—आओ, आओ रे!
अस्सी करोड़ भुज फैली हैं,
आलिंगन में बँध जाओ रे!

चालीस कोटि हृदयों की धड़कन—
हमें सुनाई देती है।
अब दूर नहीं हमको अपनी—
दिल्ली दिखलाई देती है।

हम नहीं रुकेंगे आज, खून
अपने ने हमें पुकारा है।
हम भारत की सन्तान, वहाँ
जाना अधिकार हमारा है।

सावधान हम हुए, नहीं अब
अपना समय गँवाएँगे।
यह शस्त्र हमारे कभी नहीं,
म्यानों में रहने पाएँगे।

बाधाएँ चाहे जैसी हों,
हम कभी नहीं घबराएँगे।
यम से लड़कर के भी अपनी,
आजादी वापस लाएँगे।

हथियार हमारे साथी हैं,
ईश्वर का हम पर साया है।
तूफान हमारे हाथों में,
दिल मे भूचाल समाया है।

हम या तो अपना अचल तिरंगा,
दिल्ली पर फहरा देंगे।
या आजादी के पुण्य मार्ग में,
अपनी लाश बिछा देंगे।

मा, सुनो प्रतिज्ञा लेते हैं,
तुमको आजाद कराएँगे।
हम आजादी के सैनिक हैं,
जल्दी ही दिल्ली आएँगे।

ये वायु सुने, ये साँझ सुने,
आकाश गवाह हमारा है।
'आजादी हो या मौत',
दूसरा नहीं हमारा नारा है।"

थे शब्द या कि कुछ जादू था,
रुख नया हवा ने पाया था।
कायर-से-कायर ने जिनको,
सुनकर नूतन तन पाया था।

जर्रे-जर्रे में आजादी की,
लहर दिखाई देती थी।
दिल्ली-दिल्ली की ध्वनि ही बस,
सर्वत्र सुनाई देती थी।

जिस दिन सुभाष ने ये अपना,
जग को सन्देश सुनाया था।
उस दिन से ही आजाद फौज ने,
नया संगठन पाया था।

६

खूनी हस्ताक्षर

वह खून कहो किस मतलब का,
जिसमें उबाल का नाम नहीं!
वह खून कहो किस मतलब का,
आ सके देश के काम नहीं!

वह खून कहो किस मतलब का,
जिसमें जीवन न रवानी है!
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं है, पानी है!

उस दिन लोगों ने सही-सही,
खूँ की कीमत पहचानी थी।
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में,
माँगी उनसे कुरबानी थी।

बोले, "स्वतंत्रता की खातिर,
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके हो जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

आजादी के चरणों में जो,
जयमाल चढ़ाई जाएगी।
वह सुनो, तुम्हारे शीशों के,
फूलों से गूँथी जाएगी।

आजादी का संग्राम, नहीं—
पैसे पर खेला जाता है।
यह शीश कटाने का सौदा,
नंगे सिर झेला जाता है।

आजादी का इतिहास, कहीं,
काली स्याही लिख पाती है?
इसके लिखने के लिए,
खून की नदी बहाई जाती है!"

यूँ कहते-कहते वक्ता की,
आँखों में खून उतर आया!
मुख रक्त-वर्ण होगया,
दमक उट्ठी उनकी रक्तिम काया!

आजानु बाहु ऊँची करके,
वह बोले, "रक्त मुझे देना।
इसके बदले में भारत की,
आजादी तुम मुझसे लेना।"

होगई सभा में उथल-पुथल,
सीने में दिल न समाते थे।
स्वर इन्कलाब के नारों के,
कोसों तक छाये जाते थे।

"हम देंगे-देंगे खून" शब्द बस,
यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक खड़े,
तैयार दिखाई देते थे।

बोले सुभाष, "इस तरह नहीं,
बातों से मतलब सरता है।
लो, यह कागज है कौन यहाँ,
आकर हस्ताक्षर करता है?

इसको भरने वाले जन को,
सर्वस्व समर्पण करना है।
अपना तन, मन, धन, जन-
जीवन माता के अर्पण करना है!"

एक युवक बढ़ा, बोला, "नेताजी
को हम पर विश्वास नहीं?"
उत्तर में नेताजी बोले, "ना, ना,
ऐसी है बात नहीं।

पर यह साधारण पत्र नहीं,
आजादी का परवाना है!
इस पर तुमको अपने तन का,
कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है!

वह आगे आये जिसके तन में,
खून भारती बहता हो!
वह आगे आये जो अपने को,
हिन्दुस्तानी कहता हो!

वह आगे आए जो इस पर,
खूनी हस्ताक्षर देता हो!
मैं कफन बढ़ाता हूँ आये,
जो इसको हँसकर लेता हो!"

कुछ जन्मजात नेता होते,
जो जन पर शासन करते हैं।
वे कोटि-कोटि नरवीरों के,
हृदयों पर आसन करते हैं।

जनता उनके शुभ चरणों में,
श्रद्धा के पुष्प चढ़ाती है।
अंगारों पर खुद चलती है,
पलकों पर उन्हें बिठाती है।

बाबू सुभाष भी इसी तरह,
जनता को जी से प्यारे थे।
जिनके छोटे से भाषण पर,
बह गये खून के नारे थे।

सारी जनता हुंकार उठी—
हम आते हैं, हम आते हैं!
माता के चरणों में यह लो,
हम अपना रक्त चढ़ाते हैं!

साहस से बढ़े युवक उस दिन,
देखा, बढ़ते ही आते थे!
चाकू, छुरियों, आलपीन से
अपना रक्त गिराते थे!

फिर उसी रक्त की स्याही में,
वह अपनी कलम डुबाते थे!
आजादी के परवाने पर,
हस्ताक्षर करते जाते थे!

उस दिन तारों ने देखा था,
हिन्दुस्तानी विश्वास नया।
जब लिक्खा था रणवीरों ने
खूँ से अपना इतिहास नया।

उस पुण्यकर्म में महिलाओं ने
पहले हाथ बढ़ाया था।
सत्रह कन्याओं ने आगे,
आकर के खून बहाया था।

वे दुर्गा मा-सी भीड़ चीरतीं,
बढ़ी तीर-सी आती थीं!
कमरों में खुसी कटारी से,
वे अपना रक्त गिराती थीं!

गर्वीले पंजाबी जवान,
उन्मुक्त सिंह-से आते थे!
महाराष्ट्र, बिहारी, यू० पी० के,
रणसिंह निकलते आते थे!

मदरासी, बंगाली, देखा,
उस दिन फूले न समाते थे।
वे रक्तदान के साथ-साथ,
हस्ताक्षर करते जाते थे!

दे उस दिन मुस्लिम भाई भी,
सबसे आगे आये थे!
वे जाति-पाँति सीमा-बन्धन,
जो कुछ थे, तोड़ गिराये थे!

हिन्दू और मुसलमान दोनों का,
रक्त हुआ इकठौरा था!
यह स्वतन्त्रता के महासमर का,
पहला रक्तिम च्यौरा था!

७

धन और जन

वह धन ही क्या जो पड़ा रहे,
धरती में गढ़कर दब जाए।
या बाँधा जाय थैलियों में,
सन्दूकों में जा छिप जाए।

जो बन्द तिजोरी में रहता,
वह स्वर्ण नहीं है, मिट्टी है।
जो नहीं देश-हित में आये,
वह धन धोखे की टट्टी है!

हम तो उसको धन कहते हैं,
जो काम ग़रीबों के आए।
थैली की डोरी काट चले,
आजाद देश को करवाए।

यों धनिक जगत में बहुतेरे,
पर भामाशाह अकेले थे।
जो अपने धन से स्वतन्त्रता की,
होली खुलकर खेले थे।

बर्मा में भी धनवालों ने,
तब खुलकर पुण्य कमाया था।
आजाद फौज पर जी भरकर,
सोना-चाँदी बरसाया था।

आजाद फौज ने नहीं खजाना,
हथियारों से पाया था।
उसने 'डिफेन्स कानून' नहीं
शोषण का कोई बनाया था।

वह जनता के प्रेमोपहार से,
बूँद-बूँद कर आता था।
जिससे आज़ादी का तलाब,
भरता था, बढ़ता जाता था।

बाबू सुभाष तब घूम-घूमकर,
बड़ी सभाएँ करते थे।
सैकड़ों कोस के लोग जिन्हें,
सुनने को उमड़े पड़ते थे।

नन्हे-नन्हे बच्चे आते,
कोमल-कोमल तुतलाते-से।
नवयुवक ताव में आते थे,
मूँछों पर हाथ फिराते-से।

बुढ्ढे लकड़ी ले हाथ चले
आते थे ज्वानी छाई थी।
सारे बर्मा में नई चेतना,
आज़ादी की आई थी।

आज़ादी के पैगम्बर ने,
ऐसा सन्देश सुनाया था।
मुर्दे कब्रों से जाग उठे,
जिन्दों ने जीवन पाया था।

आँधी, पानी, बरसात, बिजलियाँ,
उन्हें रोक कब पाती थीं?
लाखों की संख्या में जनता,
भाषण सुनने को आती थी।

उस भव्य सभा के लिए,
तिरंगा मंच सजाया जाता था।
चर्खे वाला कौमी झण्डा,
उस पर लहराया जाता था।

सबसे पहले नेताजी को,
जयमाल पिन्हाई जाती थी।
भाषण के बाद वही माला,
नीलाम कराई जाती थी।

श्रोता अपना सर्वस्व निछावर,
जयमाला पर करते थे।
लोगों के दल-के-दल उसको,
लेने को उमड़े पड़ते थे।

रंगून नगर में एक बार,
जयमाला की जय हो ली थी।
पहली ही बोली किसी वीर ने,
लाख रुपए की बोली थी।

फिर क्या था बढ़ दो लाख हुए,
ध्वनि पाँच लाख की छाई थी।
फिर सात लाख के लिए किसीने,
चढ़ आवाज़ लगाई थी।

आगे चल कर नौ लाख हुए,
उत्साह न आज समाता था।
बोली का सौदा लाखों में,
आगे ही बढ़ता जाता था।

पर सहसा बोली बन्द हुई,
एक युवक सामने आया था।
जयमाला पर जिसने अपना,
अन्तिम सर्वस्व लगाया था।

वह पंजाबी सौदागर था,
एक उठती हुई जवानी का।
जिसने रक्खा था मान खरा,
झेलम चिनाव के पानी का।

लोगों ने उसको उठा लिया,
गौरव से गले लगाया था।
फूलों की जयमाला लेकर,
इसने सर्वस्व चढ़ाया था।

दूसरे रोज़ सब कुछ बेचा,
बेची दुकानदारी सारी।
घर बेच दिया, ज़र बेच दिया,
बेची अपनी दौलत प्यारी।

वह बारह लाख रुपए अपना,
सर्वस्व बेचकर लाया था।
नेताजी के शुभ चरणों में,
श्रद्धा से भेंट चढ़ाया था।

बोले सुभाष, "शाबाश, वीर,
पर खुद को मत मिस्मार करो।
लो पाँच लाख, जाकर इनसे
दूसरा कोई रोजगार करो।"

वह एक कदम हटकर बोला,
"अब छूना इसे गुनाह मुझे।
नेताजी, इस धन-दौलत की,
अब रही नहीं परवाह मुझे।

यह धन-पूँजी ही तो जग में,
उत्पन्न गुलामी करते हैं।
पूँजी हथियाने ही को तो;
दो राष्ट्र जूझकर मरते हैं।

इस पूँजीवादी चक्कर ने,
दुनिया को नाच नचाया है।
दुर्भिक्ष, दीनता, कंगाली,
सब पूँजी ही की माया है।

मुझको इस धन से क्या करना,
आज़ाद फ़ौज में जाता हूँ।
आज़ादी के दीवानों में,
आगे से नाम लिखाता हूँ।"

देखा दुनिया ने जो कि कभी,
सोने-चाँदी में पलता था।
वह आज हर्ष से सेना में,
संगीन उठाए चलता था।

८

नेताजी का तुलादान

देखा पूरब में आज सुबह,
एक नई रोशनी फूटी थी।
एक नई किरन, ले नया संदेशा,
अग्निबान-सी छूटी थी।

एक नई हवा ले नया राग,
कुछ गुन-गुन करती आती थी।
आज़ाद परिन्दों की टोली,
एक नई दिशा में जाती थी।

एक नई कली चटकी इस दिन,
रौनक उपवन में आई थी।
एक नया जोश, एक नई ताज़गी,
हर चेहरे पर छाई थी।

नेताजी का था जन्मदिवस,
उल्लास न आज समाता था।
सिंगापुर का कोना-कोना,
मस्ती में भीगा जाता था।

हर गली, हाट, चौराहे पर,
जनता ने द्वार सजाए थे।
हर घर में मंगलचार खुशी के,
बाँटे गये बँधाए थे।

पंजाबी वीर रमणियों ने,
बदले सलवार पुराने थे।
थे नये दुपट्टे नयी खुशी में,
गाये नये तराने थे।

वे गोल बाँधकर बैठ गईं,
ढोलक-मंजीर बजाती थीं।
हीर-राँझा को छोड़ आज,
वे गीत पठानी गाती थीं।

गुजराती बहनें खड़ी हुईं,
गरबा की नयी तैयारी में।
मानो बसन्त आया हो ज्यों,
सिंगापुर की फुलवारी में।

महाराष्ट्र-नन्दिनी बहनों ने,
इकतारा आज बजाया था।
स्वामी समर्थ के शब्दों को,
गीतों में गति से गाया था।

वे बंगवासिनी, वीर-बहूटी,
फूली नहीं समाती थीं।
अंचल गर्दन में डाल,
इष्ट के सम्मुख शीश झुकाती थीं—

"प्यारा सुभाष चिरंजीवी हो,
हो जन्मभूमि, जननी स्वतन्त्र।
मा, कात्यायनि, ऐसा वर दो,
भारत में फैले प्रजातन्त्र।"

हर कण्ठ-कण्ठ से शब्द यही,
सर्वत्र सुनाई देते थे।
सिंगापुर के नर-नारि आज,
उल्लसित दिखाई देते थे।

उस दिन सुभाष सेनापति ने,
कौमी झण्डा फहराया था।
उस दिन परेड में सेना ने,
फ़ौजी सैल्यूट बजाया था।

उस दिन सारे सिंगापुर में,
स्वागत की नई तयारी थी।
था तुलादान नेताजी का,
लोगों में चर्चा भारी थी।

उस रोज़ तिरंगे फूलों की,
एक तुला सामने आई थी।
उस रोज़ तुला ने सचमुच ही,
एक ऐसी शक्ति उठाई थी।

जो अतुल, नहीं तुल सकती थी,
दुनिया की किसी तराजू से!
जो ठोस, सिर्फ़ बस ठोस,
जिसे देखो चाहे जिस बाजू से!

वह महाशक्ति सीमित होकर,
पलड़े में आन विराजी थी।
दूसरी ओर सोना-चाँदी,
हीरों की लगती बाजी थी।

उस मन्त्रपूत मुद मण्डप में,
सुमधुर शंख-ध्वनि छाई थी।
जब कुन्दन-सी काया सुभाष की,
पलड़े में मुस्काई थी।

एक वृद्धा का धन सर्वप्रथम,
उस धर्म-तुला पर आया था।
सोने की ईंटों में जिसने,
अपना सर्वस्व चढ़ाया था।

गुजराती मा की पाँच ईंट,
मानो पलड़े पर आई थीं।
या पंचयज्ञ से हो प्रसन्न,
कमला ही वहाँ समाई थीं!

फिर क्या था, एक-एक करके,
आभूषण उतरे आते थे।
वे आत्मदान के साथ-साथ,
पलड़े पर चढ़ते जाते थे।

मुँदरी आई, छल्ले आये,
जो पी की प्रेम-निशानी थे।
कंगन आये, बाजू आये,
जो रस की स्वयं कहानी थे।

आगया हार, ले जीत स्वयं,
माला ने बन्धन छोड़ा था।
ललनाओं ने परवशता की,
जंजीरों को धर तोड़ा था।

आगईं मूर्तियाँ मन्दिर की,
कुछ फूलदान, टिक्के आये।
तलवारों की मूँठें आईं,
कुछ सोने के सिक्के आये।

इस तुलादान के लिए,
युवतियों ने आभूषण छोड़े थे।
जर्जर वृद्धाओं ने अपने,
भेजे सोने के तोड़े थे।

छोटी-छोटी कन्याओं ने भी,
करनफूल दे डाले थे।
तावीज गलों से उतरे थे,
कानों से उतरे बाले थे।

प्रति आभूषण के साथ-साथ,
एक नई कहानी आती थी।
रोमांच नया, उद्‌गार नया,
पलड़े में भरती जाती थी।

नस-नस में हिन्दुस्तानी के,
बलिदान आज बल खाता था!
सोना-चांदी, हीरा-पन्ना,
सब उसको तुच्छ दिखाता था!

अब चीर गुलामी का कोहरा,
एक नई किरण जो आई थी।
उसने भारत की युग-युग से,
यह सोई जाति जगाई थी।

लोगों ने अपना धन-सरबस,
पलड़े पर आज चढ़ाया था।
पर वज़न अभी पूरा न हुआ,
कांटा न बीच में आया था!

तो पास खड़ी सुन्दरियों ने,
कानों के कुण्डल खोल दिये।
हाथों के गजरे खोल दिये,
जूड़ों के पिन अनमोल दिये।

एक सुन्दर सुघड़ कलाई की,
खुल 'रिस्टवाच' भी आई थी।
पर नहीं तराजू की डण्डी,
काँटे को सम पर लाई थी।

कोने में तभी सिसकियों की,
देखा, आवाज़ सुनाई दी।
कप्तान लक्ष्मी लिये एक,
तरुणी को साथ दिखाई दी।

उसका जूड़ा था खुला हुआ,
आँखें सूजी थीं लाल-लाल!
इसके पति को युद्ध-स्थल में,
कल निगल गया था कठिन काल!

नेताजी ने टोपी उतार,
उस महिला का सम्मान किया।
जिसने अपने प्यारे पति को,
आज़ादी पर कुर्बान किया।

महिला के कम्पित हाथों से,
पलड़े में शीशफूल आया।
सौभाग्य-चिन्ह के आते ही,
कांटा सहमा, कुछ थर्राया।

दर्शक जनता की आँखों में,
आँसू छल-छलकर आये थे।
बाबू सुभाष ने रुद्ध कण्ठ से,
यूँ कुछ बोल सुनाये थे—

"हे बहन, देवता तरसेंगे,
तेरे पुनीत पद-वन्दन को।
हम भारतवासी याद रखेंगे,
तेरे करुणा-क्रन्दन को।"

पर पलड़ा अभी अधूरा था,
सौभाग्य-चिन्ह को पाकर भी।
थी स्वर्णराशि में अभी कमी,
इतना बेहद गम खाकर भी।

पर, वृद्धा एक तभी आई,
जर्जर तन में अकुलाती-सी।
अपनी छाती से लगा एक,
सुन्दर-सा चित्र छिपाती-सी।

बोली, "अपने इकलौते का,
मैं चित्र साथ में लाई हूँ।
नेताजी लो सर्वस्व मेरा,
मैं बहुत दूर से आई हूँ।"

वृद्धा ने दी तस्वीर पटक,
शीशा चरमर कर चूर हुआ!
वह स्वर्ण-चौखटा निकल आप,
उसमें से खुद हो दूर हुआ!

वह क्रुद्ध सिहनी-सी बोली,
"बेटे ने फाँसी खाई थी!
उसने माता के दूध-कोख को,
कालिख नहीं लगाई थी!

हाँ, इतना ग़म है, अगर कहीं,
यदि एक पुत्र भी पाती मैं!"
तो उसको भी अपनी भारत-
माता की भेंट चढ़ाती मैं।

इन शब्दों के ही साथ-साथ,
चौखटा तुला पर आया था।
होगई तुला समतल, काँटा,
झुक गया, नहीं टिक पाया था!

बाबू सुभाष उठ खड़े हुए,
वृद्धा के चरणों को छूते।
बोले, "मा, मैं कृतकृत्य हुआ,
तुझ-सी माताओं के बूते!

है कौन आज जो कहता है,
दुश्मन बरबाद नहीं होगा।
है कौन आज जो कहता है,
भारत आजाद नहीं होगा।"

६

गांधी-जयन्ती

दुनिया खतरे में झूल रही,
दुख की बदली घिर आई है।
परतंत्र होगई मानवता,
हर ओर गुलामी छाई है।

हर ओर चीख, रोदन, कराह,
फैली हर ओर निराशा है।
जुल्मों का अन्त कभी होगा,
इसकी न शेष कुछ आशा है।

शासक का फौलादी पंजा,
शोषक पर बढ़ता आता है।
राजा का दरजा रोज-रोज,
परजा से चढ़ता जाता है।

भूखा किसान, भूखा मजूर,
पड़ गये जबाँ पर ताले हैं।
भगवान उठ गया दुनिया से,
होगए भक्त मतवाले हैं।

पर नहीं-नहीं, दो अक्तूबर को,
ऐसा भी क्षण आया था।
जब दुनिया ने मानवता के,
पैगम्बर को उपजाया था।

जब सारे जग के दीन-हीन,
दुखियों ने वाणी पाई थी।
जब प्रथम-प्रथम राष्ट्रीय चेतना,
इस भारत में आई थी।

उस पुण्यपुरुष, युग-निर्माता,
उस जन-जीवन की आंधी का।
था आज जन्मदिन राष्ट्रपिता,
मतिमान महात्मा गांधी का।

बर्मा, सिंगापुर, हिन्दचीन में,
हुई तयारी भारी थी।
आजाद फौज के हल्कों में,
इसकी विशेष तैयारी थी।

तम्बू-तम्बू पर आज तिरंगा,
तना दिखाई देता था।
सुख छाया था, कोई न कहीं,
अनमना दिखाई देता था।

सेना में मुसलमान भी थे,
कुछ और मांसाहारी थे।
पर आज सभी ने व्रत रक्खा,
जितने भी नर और नारी थे।

यह रक्तदान देने वाले,
जो जूझ रहे थे हिंसा में ।
कर गये प्रकट विश्वास आज
बापू की प्रबल अहिंसा में ।

सिंगापुर में इस समारोह की,
सचमुच छटा निराली थी ।
उस महानगर ने नई तिरंगी,
रौनक आज बना ली थी ।

उस दिन प्रभातफेरी निकली,
कप्तान लक्ष्मी बाई की ।
सुन आजादी के गीतों को,
छाती तन गई सिपाही की ।

बज गया बिगुल, सेना के दल,
सजकर परेड को आये थे ।
सब के कन्धों पर नये तिरंगे,
बैज आज छवि छाये थे ।

बज रहा बैंड कौमी धुन में,
सेनाएँ मार्च बजाती थीं ।
गांधीजी की जय हो, जय हो,
ध्वनि आसमान में छाती थी ।

सेनापति आये थे सुभाष,
फौजी वर्दी में तने हुए ।
बुशशर्ट, कैप, ब्रीचेज, बूट में,
चीफ कमाण्डर बने हुए ।

था रंग नया, था ढंग नया,
थी फौज नई, था राज नया।
थी नये खून की नई लहर,
थी अदा नई, अन्दाज नया।

बाबू सुभाष लेते सल्यूट,
सेना में बढ़ते जाते थे।
स्वर इन्कलाब के नारों के,
ऊँचे ही चढ़ते जाते थे।

नजदीक 'पोल' के आने पर,
ध्वनि 'सावधान!' की छाई थी।
लोगों की नजर तिरंगे पर,
तब इकटक जमी दिखाई थी।

जब डोर खींच नेताजी ने।
कौमी झंडा फहराया था।
तब सागर मा की ममता का,
हर सीने में लहराया था।

जब डबल मार्च करते सेना ने,
गीत विजय का गाया था।
तब हर गुलाम का दिल अपनी,
परवशता पर झुँझलाया था।

उस दिन का-सा विशाल उत्सव,
होचुका न आगे होना है।
जिसकी सुधि से अब भी चर्चित,
बर्मा का कोना-कोना है।

उस दिन का-सा जनरव समूह,
पहले न सभा में आया था।
उस दिन का-सा उल्लास नहीं,
जनता ने कभी दिखाया था।

था मंच तिरंगा, पाल तिरंगा,
झंडी तनी तिरंगी थीं।
था चित्र तिरंगा बापू का,
रोशन बत्तियाँ तिरंगी थीं।

था सभी राजसी ठाठ,
विविध राज्यों के प्रतिनिधि आये थे।
चाँदी के शुभ सिंहासन पर,
बापू सचित्र बैठाये थे।

सबसे पहले एक बौद्ध भिक्षु,
सानन्द मंच पर आये थे।
कर धर्मचक्र का विधि-विधान,
प्रार्थना-गीत कुछ गाये थे।

फिर कुरान की आयतें पढ़ीं,
एक मौलाना ने आकर के।
कुछ गीत पढ़े बालाओं ने,
सुमधुर कंठों से गाकर के।

तब खड़े हुए बाबू सुभाष,
बोले, "प्रणाम, बापू प्रणाम!
हे राजनीति के गुरु मेरे,
तुमको पहुँचे मेरा प्रणाम!"

फिर बोले, "भारत देश हमारा,
सब देशों से न्यारा है ।
गंगा-यमुना, मन्दिर-मस्जिद से,
पावन देश हमारा है ।

वह भूमि हमारी सुन्दर है,
आकाश हमारा सुन्दर है ।
है चाँद वहाँ का सुन्दरतम,
सुन्दर क्या खूब समुन्दर है !

उसके पेड़ों पर पंछीगन,
बोली में अमृत घोल रहे ।
उसके झरने ऋषि-मुनियों की,
अब तक देखो जय बोल रहे ।

ऋषियों का देश हमारा है,
देवों का देश हमारा है ।
यह जिसकी पुण्य जयन्ती है,
वह सुनो, महाऋषि प्यारा है ।

बापू ने अपने सत्य,
अहिंसा से जग को ललकारा है ।
वह मानवता का पैगम्बर,
भारत का पिता हमारा है ।

निश्चय ही जगत अहिंसा से,
मानवता को पा सकता है ।
निश्चय ही इससे दुनिया का,
श्री-सौख्य लौट आ सकता है ।

पर आज दुष्ट दानवता का,
दुनिया पर छाया साया है।
कुछ ताकत वाले देशों ने,
जनता को आज दबाया है।

इसलिए प्रथम हम भारत को,
लड़कर आजाद कराएँगे।
हिंसक लोगों को हिंसा ही का,
पहले सबक सिखाएँगे।

अपनी तलवारों के बल से,
हम पहले दिल्ली जाएँगे।
फिर अपने बापू को सादर,
हम लाल किले में लाएँगे।

तब रत्नजटित सिंहासन पर,
श्रद्धा से उन्हें बिठाएँगे।
निर्मल पवित्र गंगाजल से,
हम उनके चरण धुलाएँगे।

फिर कह देंगे उनसे—गुरुवर,
अब दुनिया का नेतृत्व करो।
वसुधा के कोने-कोने को,
बापू, अब उठो पवित्र करो।"

१०

दिल्ली की ओर कूच

मैं किस काली का ध्यान करूँ,
मैं किस भैरव को याद करूँ ?
मैं किस चेतक पर चढ़ जाऊँ,
किन भीलों से फर्याद करूँ ?

मैं किस शंकर प्रलयंकर के,
तीसरे नयन की ज्वाल बनूँ ?
मैं शूल बनूँ कि त्रिशूल बनूँ,
किस क्रुद्ध गीत की ताल बनूँ ?

किस गांडीव का तीर बनूँ,
ए कलम मुझे बतलादे तू !
होजाय देश आजाद मेरा,
ऐसी ज्वाला सुलगादे तू !

जैसी ज्वाला आजादी के,
दीवानों ने सुलगाई थी ।
बर्मा में फैला था प्रकाश,
लपटें दिल्ली तक आई थीं।

आजाद फौज की नगर-नगर,
घर-घर में फिरी दुहाई थी ।
शोले यूरप जा पहुँचे थे,
लन्दन में चिन्ता छाई थी ।

वह बलिदानी संगठन, बाढ़-सा,
आगे बढ़ता जाता था ।
वह आजादी का जादू था,
जो क्षण-क्षण चढ़ता जाता था ।

नेता सुभाष ने लोगों पर,
कुछ इन्द्रजाल-सा डाला था ।
हर व्यक्ति वहाँ आजादी पर,
मर मिटने को मतवाला था ।

कैसा कपड़ा, कैसा खाना,
क्या वेतन, खर्च सिपाही का !
बस, एक लक्ष्य आजादी था,
आजाद फौज के राही का !

हिल गई धरा, डुल गया व्योम,
दुश्मन के दिल को कँपा दिया ।
आजाद फौज के वीरों ने,
दिल्ली की ओर प्रयाण किया ।

नदियाँ न रोक पाईं उनको,
जंगल भी रोक न पाते थे ।
वे कदम-कदम पर भारत की,
दिल्ली को लेने आते थे ।

वे ऊँचे विकट पहाड़ों पर,
आँधी-से चढ़ते जाते थे।
हर खंदक पर, हर खाई पर,
लड़ते थे, बढ़ते जाते थे।

वे पत्ते खाकर रहते थे,
वे चिथड़ों को अपनाते थे।
गोलियाँ ख़त्म होजाने पर,
संगीनों से भिड़ जाते थे।

यद्यपि थे साधनहीन, मगर,
साहस में वीर निराले थे।
अंग्रेजी पल्टन के पल में,
औसान खता कर डाले थे।

उनकी गोली ख़ाली न गई,
सीने में सदा समाती थी।
एक ही बार में दुश्मन को,
सीधा यमपुर पहुँचाती थी।

तब हिन्दुस्तानी लोहे की,
कीमत जग ने पहचानी थी।
कालों के विष की दवा नहीं,
यह बात सभी ने मानी थी।

दन-दन-दन-दन गोलियाँ दनकतीं,
तड़-तड़ पड़ती जाती थीं।
धूँ-धूँ-धूँ गोलों की आवाज,
क्षण-प्रति-क्षण बढ़ती जाती थी।

धप-धप करती संगीनों ने,
छप-छप कर रक्त बहाया था।
छोटी-सी टामीगन ने भी,
गोली का मेह गिराया था।

हथियारों ने भी सोचा था,
आओ, कुछ सुयश कमा लें हम।
आजादी की इस गंगा में,
खुल करके क्यों न नहा लें हम?

वे न्हाये और ऐसे न्हाये,
होगई चंडिका मतवाली!
लोहू से खप्पर भरने को,
आगई स्वयं माता काली!

कोहिमा लिया, मणिपुर आया,
आगया विशनपुर हाथों में।
इम्फाल मोर्चे को जीता,
वीरों ने बातों-बातों में!

भारत के विकट मोर्चे पर,
भगदड़ दिखलाई देती थी।
आजाद फौज के विजय गीत की,
तान सुनाई देती थी।

११
मुकदमा और मुक्ति

मैं बोलो किसकी जय बोलूँ,
जनता की या कि जवाहर की ?
या भूलाभाई देसाई-से,
कानूनी नर-नाहर की ?

या कहूँ समय की बलिहारी,
जिसने यह कर दिखलाया है।
आजाद फौज के वीरों को,
फाँसी पर से लौटाया है।

या बहुत दिनों के बाद,
समझ नौकरशाही को आई है ?
फंदे में फँसी बिलाई ने,
या बेबस दया दिखाई है ?

ये तीन शेर छूटे कि मुझे,
देरहा साफ दिखलाई है।
भारत माता गमगीन न हो,
मंगल की वेला आई है।

मंगल की वेला, उठो सुहागिन,
गीत खुशी के गाओ तुम !
मंगल की वेला, द्वार-द्वार पर,
मुतियन चौक पुराओ तुम !

मंगल की वेला, साज कलश,
अमृत मंगल भर लाओ तुम !
सहगल की बहनो, उठो,
आरती अगनित दीप सजाओ तुम !

ढिल्लन की पत्नी, उठो,
आज सौभाग्य तुम्हारा आया है !
ऐ देश, उठो, सेनानी,
शाहनवाज लौटकर आया है !

उठ पड़ो देश के नौजवान,
'जयहिन्द' तुम्हारा नारा हो।
आजादी ध्येय हमारा हो,
साहस ही सिर्फ सहारा हो ।

जिस साहस के बल का लेकर,
चल पड़ी लक्ष्मीबाई थी ।
साहस के बल को पाकर ही,
टीपू ने लड़ी लड़ाई थी ।

बापू ने सत्य-अहिंसा से,
साहस का पाठ पढ़ाया है ।
हम कोटि-कोटि असहायों में,
जिससे नव जीवन आया है।

सन् बयालीस में लोगों ने,
साहस की ज्योति जगाई थी।
साहस से वीर जवाहर ने,
जिसकी सराहना गाई थी।

फिर और चौगने साहस से,
उसने ही देश जगाया था।
आजाद फौज के मसले को,
घर-घर में जा पहुँचाया था।

कुछ भी हो नून मियाँजी का,
शुक्रिया अदा करना होगा।
उस 'उलटी खिदमत' के आगे,
सबको पानी भरना होगा।

वह अगर उठाते नहीं,
प्रश्न आजाद फौज का आता क्यों?
फिर लाल किले की दीवारों में,
न्याय रचाया जाता क्यों?

निश्चय ही दुनिया रह जाती,
अनजान हमारे साके से।
फिर कैसे कालिख मिट पाती,
पंजाबी बीर इलाके से।

नेताजी का, उनकी फौजों का,
हाल न हमको मिल पाता।
निश्चय ही गदर दूसरे का,
इतिहास अधूरा रह जाता।

इतिहास बना था जो कि कभी,
बर्मा के उन मैदानों में ।
इतिहास बना था जो कि कभी,
सिंगापुर के तूफानों में ।

इतिहास बना था जो कि कभी,
वीरों के सुभट तरानों में।
इतिहास बना था जो कि कभी,
नेताजी की मुस्कानों में ।

इतिहास त्याग का, साहस का,
इतिहास भारती ज्वानों का ।
इतिहास नई आजादी का,
इतिहास अमर बलिदानों का।

लिखते-लिखते रुक गया,
जब कि फौजों ने बाजी हारी थी।
साहस तो था मजबूत,
मगर मज़बूत नहीं तैयारी थी।

चुक गई रसद, चुक गये अस्त्र,
साधन थे नहीं सवारी थी ।
आजाद फौज के लोगों ने,
तब जीती बाजी हारी थी।

दुश्मन के दल-के-दल चहुँ दिशि,
घिर दल-बादल-से छाये थे।
तब कहीं सूरमा भारत के,
असहाय पकड़ में आये थे ।

सोचा कि जान यूँ देने से,
कुछ नहीं हाथ में आएगा।
आजादी का संकल्प,
अधूरा ही इससे रह जाएगा।

इसलिए लड़ाई बन्द करें,
यदि मौका फिर से पाएँगे।
तो सत्य-अहिंसा के बल से,
अपनी आजादी लाएँगे।

"मैं तुम्हें मिलूँगा भारत में,
वीरो, हम आज बिछुड़ते हैं।"
नेताजी बोले, "वीर नहीं,
साहस में कभी पिछड़ते हैं।"

काँग्रेस तुम्हारी रक्षक है,
उसके साये में जाना तुम।
भारत माता के दूध-कोख को,
कालिख नहीं लगाना तुम।"

कप्तान लक्ष्मी भी बोली,
"आजाद देश में जाऊँगी।
अपनी माताओं, बहनों को
साहस का पाठ पढ़ाऊँगी।

भाइयो, विदा, यह बहन तुम्हारी,
जहां कहीं भी जाएगी।
आजादी की चिनगारी को,
दे-देकर हवा जगाएगी।"

भारती वीर हुँकार उठे,
"हम जहाँ कहीं भी जाएँगे
आजादी की अपनी यमुना,
दिल्ली की ओर बहाएँगे।"

बस हुआ यवनिका-पात,
एक तारा ऊपर से टूटा था।
आजाद फौज के वीरों का,
उस रोज संगठन-फूटा था।

× × ×

अब कथा वहाँ की छोड़,
लौट हम लाल किले में आते हैं।
आजाद फौज के शेरों को,
पिंजड़ों में बैठा पाते हैं

पाते हैं वीर जवाहर ने,
कुछ ऐसी ज्योति जगाई है।
जिसकी ज्वाला से भारत की,
सारी जनता गरमाई है।

'आजाद फौज छोड़ो-छोड़ो',
बस यही सुनाई देता है।
आजाद फौज का जोश नया,
फैला दिखलाई देता है।

सप्रू आये, काटजू चले,
नेहरू ने चोगा पहना था।
भूलाभाई ने हाथ लिया,
अपनी मिसलों का गहना था।

दिल्ली के आसफअली आज,
देखा था खड़े अगाड़ी थे।
हर जमात के, हर तबके के,
लाखों ही लोग पिछाड़ी थे।

फिर चला मुकदमा दिल्ली में,
फुँकार 'नाग' ने मारी थी।
पर उसकी भूलाभाई ने,
सारी ही कला बिगाड़ी थी।

सरकार हुई 'थी परेशान,
हर गवाह टूटता जाता था।
यह देशप्रेम का सोता था,
रुकता न फूटता जाता था।

अपने फैलाए चक्कर में,
सरकार उलझती जाती थी।
क्या नाहक बला मोल ले ली,
झुँझलाती थी, पछताती थी।

सारी दुनिया पहचान गई,
भारत की अमर कहानी को।
सरकार बिचारी मान गई,
उस कानूनी मर्दानी को।

जिसके बल पर देसाई ने,
अंग्रेजों को ललकारा था।
जब राष्ट्रप्रेम ने दंगल में,
फौजी कानून पछाड़ा था।

तो मान गई सरकार,
देश की भारी कौम परस्ती को।
या मान गई हो मानो वह,
आजाद फौज की हस्ती को।

हालां कि अदालत ने वीरों को,
दोषी ही ठहराया था।
पर आकनलिक सेनापति की,
यह नहीं समझ में आया था।

होगए वीर आजाद आज,
खुशियों का आलम छाया है।
जयहिन्द, 'व्यास' ने भी अपना,
यह कौमी राग सुनाया है:—

कदम कदम बढ़ाए जा,
खुशी के गीत गाए जा।
ये जिन्दगी है कौम की,
कौम पर लुटाए जा।

तू शेरेहिन्द, आगे बढ़,
मौत से कभी न डर।
फलक तलक उठा के सर,
जोशे वतन बढ़ाए जा।

खुदा तेरी सुनता रहे,
हिम्मत तेरी बढ़ती रहे।
जो सामने तेरे पड़े,
तू खाक में मिलाए जा।

दिल्ली चलो पुकार के,
कौमी निशां सम्हाल के।
लाल किले में गाढ़ के,
लहराए जा, लहराए जा।
खुशी के गीत गाए जा।

हमारा काव्य-साहित्य

वन्दना के बोल : हरिकृष्ण 'प्रेमी' २।)

रूप-दर्शन : हरिकृष्ण 'प्रेमी' ६)

आँखों में : हरिकृष्ण 'प्रेमी' २।)

बलिपथ के गीत : जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद ३)

नव-प्रभात : चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र ।।।)

रावण महाकाव्य : हरदयालु सिंह ५)

काव्य-धारा : संग्रह-कर्ता डा० इन्द्रनाथ मदान ३।।)

मधु-सञ्चय : संग्रह-कर्ता बालकृष्ण राव २।।)

प्राणोत्सर्ग : देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' १।)

राजधानी के कवि : कौल तथा त्यागी ३)

गीत गोविन्द (सचित्र पद्यानुवाद) :
विनयमोहन शर्मा ५)

प्रथम सुमन : सत्यवती शर्मा १)

अमृतप्रभा : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह ।।=)

अम्बपाली : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह ३।।)

राधा-कृष्ण : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह ३।)

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६